JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता

संजीव कुमार चौहान[1], डॉ० योगेश्वर प्रसाद शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
[2]शोध पर्यवेक्षक, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

सारांश

स्वामी जी का जीवन भारत के लिए अमूल्य वरदान की तरह था। उनका सम्पूर्ण जीवन माँ भारती और भारतवासियों की सेवा हेतु समर्पित था। वे इस युग के पहले भारतीय हैं जिन्होंने हमारे देश की आध्यात्मिक श्रेष्ठता और पाश्चात्य देशों की भौतिक श्रेष्ठता से परिचित कराया और हमें अपने भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास के लिए सचेत किया। इन्होंने भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को समाजवाद और विश्व शांति का दिव्य पाठ पढ़ाया। इनका जीवन आज तक असंख्य मानवों को आध्यात्म व सेवा के सम्बन्ध की प्रेरणा दे रहा हैं। भारत के लिए स्वामी जी के विचार चिंतन और संदेश प्रत्येक भारतीय के लिए अमूल्य धरोहर है तथा उनके जीवन शैली और आदर्श प्रत्येक युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत्र हैं। विवेकानन्द बड़े स्वप्नदृष्टा थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद न रहे। स्वामी जी एक व्यक्ति नही वरन् एक चमत्कार भी थे।

इनके व्यक्तित्व और विचारों में भारतीय संस्कृति परंपरा के सर्वश्रेष्ठ तत्व निहित थे। इन्होंने अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य भारत के नैतिक तथा सामाजिक पुर्नउत्थान के लिए एक अनुप्रेरित कार्यकर्ता के रूप में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उनके जैसा विचारशील युवा अब होना मुश्किल है। आज जबकि हम अपनी बहुमूल्य सम्पदा एवं अपनी संस्कृति को त्याग कर पाश्चात्य संस्कृति के रंग मे रंग रहे है। ऐसे में स्वामी विवेकानन्द का स्मरण किया जाना आवश्यक है। जिस संस्कृति को हम अनदेखा कर रहे हैं। उसे यूरोप मे स्वामी जी ने अपने ओजपूर्ण भाषण से ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया। वे आधुनिक भारत के एक आदर्श प्रतिनिधि होने के अतिरिक्त वैदिक धर्म एवं संस्कृति के समस्त स्वरूपों के उज्जवल प्रतीक थे। स्वामी जी ने अपने सुंदर आकर्षक व्यक्तित्व से विश्व को सम्मोहित किया, साथ ही अपने व्यक्तित्व कृतित्व से भारतवर्ष को पुनः जगत गुरु के रूप में प्रदर्शित किया।

शब्द कुँजीः– स्वामी विवेकानन्द का परिचय, अध्ययन का उद्देश्य, परिकल्पना, आंकड़ों का संग्रह और अध्ययन विधि, अध्ययन का परिसीमन, स्वामी विवेकानन्द जी का शैक्षिक दर्शन, स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता।

स्वामी विवेकानन्द का परिचयः–

युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द संसाररूपी आकाश में, अज्ञानरूपी अंधकार में, जो चन्द्रमा की तरह चमके, ऐसे क्रान्तिकारी, आध्यात्मिक संत सुधारक के रूप में अवतरित हुए। स्वामी विवेकानन्द का वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था उनका जन्म 12 जनवरी 1863 ई. में कलकत्ता के क्षत्रिय परिवार में हुआ था। सन् 1881 में उनकी मुलाकात श्री रामकृष्ण परमहंस से हुई। रामकृष्ण परमहंस ने इस युवक को अपने प्रमुख शिष्य का स्थान दिया। सन् 1886 मे श्री रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के समय विवेकानन्द उनके सर्व प्रिय शिष्य थे। अपने गुरु स्वामी परमहंस की मृत्यु के बाद विवेकानन्द जी अज्ञातवास में एकांतवास में साधनारत रहने के बाद भारत भ्रमण पर रहे। और भारतीय संस्कृति के सभी महत्वपूर्ण

केन्द्रों में गए। स्वामी जी ने भारत (हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक) का भ्रमण किया। अपनी कुशाग्र बुद्धि और संवेदनशील हदय से देश का भ्रमण कर हजारों बातें ग्रहण की।

स्वामी जी सन् 31 मई 1893 को अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। 21 सितंबर 1893 को वह विश्वधर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए शिकागो पहुँचे। स्वामी जी को अमेरिका में दिए गए अपने भाषण की शुरुआत "मेरे अमेरिकी भाइयों एवं बहनों" के लिए जाना जाता है। उन्होंने हिन्दू धर्म का आध्यात्मिक आधार पर सम्मलेन में जीवंत वैचारिक विवरण दिया। उनका वेदान्त पर भाषण इतना अधिक प्रभावशाली रहा कि उन्हें विश्वधर्म सम्मेलन में सर्वोच्च आसन पर प्रतिष्ठित किया गया। उनके भाषाणों ने सम्पूर्ण विश्व में हलचल मचा दी। स्वामी जी 1895 में अमेरिका से इंग्लैंड पहुँचे और यूरोप के इटली, जर्मनी, फ्राँस, स्वीटजरलैंड आदि अनेक देशों का भ्रमण किया। उस भ्रमण के दौरान वे अनेक व्यक्तियों से मिले एवं अनेक समस्याओं, रीतिरिवाज, संस्कृतियों तथा परिस्थितियों का प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त किया। और वहाँ वेदान्त धर्म का अत्यधिक प्रचार किया।

स्वामी जी का निधन 4 जुलाई 1902 को हुआ। यूरोप मे हिन्दू धर्म की पताका फहराने वाले स्वामी विवेकानन्द आज के युवाओं की भाँति ही तार्किक प्रवृति के थे। आज के युवाओं की तरह उन्होने कभी भी यूँ ही धर्म ओर संस्कृति पर कोई प्रतिकूल टिप्पणी नहीं की। उन्होने इसके बारे मे जानने के लिए प्रयास भी किया। स्वामी जी का जीवन वर्तमान समय मे आदर्श है।

अध्ययन के उद्देश्यः–

- ✓ स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
- ✓ स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाः–

- ✓ स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक दर्शन का समाज पर सकारात्मक प्रभाव हैं।

आँकडों का संग्रह एवं अध्ययन विधिः–

वर्तमान अध्ययन में आँकडों के स्रोत स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक दर्शन पर आधारित है। इसलिए शोधार्थी ने विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र करने का निर्णय लिया। आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए शोधार्थी ने प्रासंगिक साहित्य का व्यापक उपयोग किया। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है।

1. प्राथमिक डेटा का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है।

2. द्वितीयक डेटा का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, पुस्तकों, ऑनलाइन पोर्टलों, समाचार पत्रों के लेखों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक विधि का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

अध्ययन का परिसीमनः–

अध्ययन को स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता तक सीमित कर दिया गया है।

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शनः–

स्वामी विवेकानन्द जी के समग्र व्यक्तित्व पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट दिखाई देगा कि उनका अध्ययन और स्मरण–शक्ति अत्यन्त असाधारण थे। इतना ही नहीं, यदि वे किसी पुस्तक को देख लेते तो उसकी विषय–वस्तु को पूर्णतया ग्रहण कर लेते थे। उनके अध्ययन का दायरा इतना विस्तृत था कि प्राच्य और पाश्चात्य दर्शन, विज्ञान, राजनीति–शास्त्र, संगीत–शास्त्र, स्थापत्य–कला, ललित–कला, तत्कालीन प्रौद्योगिकी, भौतिक और अध्यात्मिक, लौकिक और पारलौकिक सभी विषयों का उनका अध्ययन आश्चर्यचकित कर देने वाला था। वेदान्त दर्शन को व्यवहारिक बनाने के साथ–साथ उन्हें सरल भाषा में सब जगह जाकर समझाने का भरसक प्रयास किया है। इस विधा को अपने देश मे ही नहीं अपितु विदेशों में भी समझाने का प्रयास किया है। उनका यह दृढ़ विश्वास है, कि वेदान्त दर्शन बुद्धि विलास का समय नहीं है वह एक सम्पूर्ण जीवन का दर्शन है।

ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने हमारे राष्ट्र की मौलिक आकांक्षाओं की अनदेखी की, इसलिए स्वामी जी भारत में ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली के हमेशा खिलाफ थे। उन्होंने भारतीय शैक्षिक, सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय आदर्शों के आधार पर शिक्षा की एक राष्ट्रीय प्रणाली की शुरुआत की वकालत की। स्वामी जी के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को अपने अस्तित्व के संघर्ष के लिए तैयार करती है। शिक्षा मनुष्य को समाज सेवा के लिए तथा उसके चरित्र को विकसित करने के लिए तैयार करती है और अंत में उसे शेर की भावना और साहस से भर देती है। क्योंकि डिग्री प्राप्त करना कोई शिक्षा नहीं है, उचित शिक्षा को चरित्र, मानसिक शक्तियों, बुद्धि के आधार पर देखा जाना चाहिए और व्यक्तियों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता पैदा करनी चाहिए। शिक्षा अंधकार और अज्ञान से खुलने का एक साधन है, शिक्षा प्राप्त करने के बाद ही ज्ञान की चमक, चमक उठेगी। स्वामी विवेकानन्द जी के समग्र व्यक्तित्व पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट दिखाई देगा कि उनका अध्ययन और स्मरण–शक्ति अत्यन्त असाधारण थे। इतना ही नहीं, यदि वे किसी पुस्तक को देख लेते तो उसकी विषय–वस्तु को पूर्णतया ग्रहण कर लेते थे। उनके अध्ययन का दायरा इतना विस्तृत था कि प्राच्य और पाश्चात्य दर्शन, विज्ञान, राजनीति–शास्त्र, संगीत–शास्त्र, स्थापत्य–कला, ललित–कला, तत्कालीन प्रौद्योगिकी, भौतिक और अध्यात्मिक, लौकिक और पारलौकिक, सभी विषयों का उनका अध्ययन आश्चर्यचकित कर देने वाला था। स्वाध्याय और आत्मज्ञान ही वास्तविक शिक्षा है। शिक्षक केवल छात्र का मार्गदर्शन करता है, सुझाव देता है, इंगित करता है और मदद करता है और छात्रों को ज्ञान के छिपे हुए खजाने का पता लगाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करता है, जो उसके भीतर निष्क्रिय है। उन्होंने सैद्धांतिक और शैक्षणिक शिक्षा की निंदा करते हुए व्यावहारिक और प्रयोगात्मक शिक्षा के लिए जोरदार ढंग से बात की। उन्होंने अपने देशवासियों को चेतावनी देते हुए कहा कि आपको सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक होना होगा। उनके विचारानुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना मात्र नही है अपितु उसका लक्ष्य जीवन चरित्र और मानव का निर्माण करना होता है। जिसमें विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति का ज्ञान होता हैं। उन्होंने किताबी शिक्षा और रटने की स्मृति शिक्षा की निंदा की और इनकार किया।

स्वामी जी के विचार शिक्षा और दर्शन में इतने प्रभावी हैं कि स्वामी जी के द्वारा दिए गए सैकड़ों वक्तव्यों में से कोई एक वक्तव्य महान् क्रांति करने के लिए व्यक्ति के जीवन में अमूल्य परिवर्तन करने में समर्थ है। उनके विचारों से हमें प्रेरणा, तथा स्फूर्ति प्रदान होती है। इनके वेदान्त दर्शन में जीवन के शास्वत मूल निहित है स्वामी विवेकानन्द ने वैदिक दर्शन एवं धर्म को पुर्नजीवित करने के लिए जीवन भर प्रयास किया। रामकृष्ण मिशन की स्थापना इनका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

स्वामी विवेकानन्द जी के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकताः–

स्वामी जी ने भारतीय शैक्षिक और सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय आदर्शों के आधार पर शिक्षा की एक राष्ट्रीय प्रणाली की शुरुआत की वकालत की। उन्होंने पश्चिम की अंधी नकल की आलोचना की। वह नई चीजों की शुरूआत के पक्षधर थे, लेकिन बदलने के विचार के खिलाफ थे। उन्होंने तर्क दिया, निश्चित रूप से नई चीजें सीखनी हैं, पेश की जानी हैं और काम करना है।

स्वामी विवेकानन्द का यह शैक्षिक दर्शन बच्चों में भारतीय संस्कृति के आवश्यक मूल्यों को विकसित करने के लिए वर्तमान तक प्रासंगिक है। बाल–केंद्रित शिक्षा पर उनका जोर उनके शैक्षिक दर्शन का एक और उल्लेखनीय पहलू है। स्वामी जी ने सभी के लिए न्यूनतम शिक्षा उपलब्ध कराने और देश के प्रत्येक बच्चे में भारतीय संस्कृति की अनिवार्यता को विकसित करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की वकालत की। इस प्रकार, स्वामी विवेकानन्द का यह शैक्षिक दर्शन बच्चों में भारतीय संस्कृति के आवश्यक मूल्यों को विकसित करने के लिए प्रासंगिक है। वे चाहते थे कि शिक्षा की शुरुआत बच्चे के परिवार से हो। फिर उसमें उसका गाँव, समाज और देश शामिल होना चाहिए। धीरे–धीरे, व्यापक समझ के विकास के साथ बच्चा खुद को पूरी दुनिया का नागरिक मानने लगेगा। इस प्रकार उनमें विश्व बंधुत्व की भावना भी स्वतः ही विकसित हो जाएगी।

स्वामी विवेकानन्द का यह शैक्षिक दर्शन शिक्षा के वर्तमान सन्दर्भ में आधुनिक भारत की शैक्षिक आवश्यकताएं तथा हमारे संविधान की प्रस्तावना में परिलक्षित होता हैं। यह स्पष्ट है कि शैक्षिक उद्देश्य, सामग्री और शिक्षण के तरीके और वास्तव में शिक्षा की पूरी प्रक्रिया इन स्तंभों – धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद और लोकतंत्र पर आधारित होनी चाहिए। स्वामी जी ने स्वतंत्र भारत की शैक्षिक आवश्यकताओं की भी कल्पना की और तदनुसार उन्होंने अपने दार्शनिक विचार को सामने रखा (थॉमस, 2013) । उनके विचार आज भी काफी प्रासंगिक हैं। वह धर्म के प्रति उदार दृष्टिकोण के पक्षधर थे और तदनुसार धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों की वकालत करते थे। उनका मानना था कि अज्ञानता समाज की सबसे बड़ी बुराई है। उन्होंने सामूहिक शिक्षा यानी मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के साथ–साथ वयस्क शिक्षा की भी वकालत की। महिलाओं की शिक्षा की उनकी वकालत आज की जरूरतों के अनुरूप है। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को राष्ट्रीय उत्थान का प्रमुख साधन माना। उन्होंने शिक्षा की एक ऐसी प्रणाली की वकालत की जो समतावादी थी। उन्होंने शिक्षा में मानवतावाद की भावना को पुनर्जीवित किया।

शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द के विचारों को उनके अपने शब्दों में कहा जा सकता है, "हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो।" उन्होंने जोर देकर कहा कि यह उच्च वर्गों का कर्तव्य था, जिन्होंने गरीबों की कीमत पर अपनी शिक्षा प्राप्त की थी। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य हैं:– शारीरिक विकास, मानसिक विकास, चारित्रिक विकास, एकाग्रता के लिए ब्रह्मचर्य का पालन, व्यावसायिक उद्देश्य, व्यक्तित्व का विकास, स्वयं में विश्वास, श्रद्धा का विकास, त्याग की भावना का विकास और सार्वभौमिक भाईचारे को बढ़ावा देना। स्वामी विवेकानन्द ने भौतिकवादी पाश्चात्य समाज में आध्यात्मिक योग और वेदान्त शिक्षा के प्रभाव पर बोला है। वे त्याग तथा निःस्वार्थ सेवा पर बल देते रहे। स्वामी जी के चिंतन में दलितों, महिलाओं व गरीबों के उत्थान तथा 'कर्म की प्रधानता' का विचार विशेष रूप से उपस्थित रहा।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, शिक्षण की विधियाँ हैं: ध्यान, एकाग्रता विधि, ब्रह्मचर्य, योग, चर्चा और चिंतन विधि, अनुकरण विधि, व्यक्तिगत मार्गदर्शन और परामर्श, गतिविधि, व्याख्यान विधि। उनके अनुसार पाठ्यक्रम में वेदांत, धर्म, दर्शन और धर्मशास्त्र, विज्ञान, इंजीनियरिंग और तकनीकी विषयों का अध्ययन शामिल है। स्कूल पाठ्यक्रम में वेदांत, धर्म, दर्शन और धर्मशास्त्र के विषय गायब हैं जिन्हें स्वामी जी के शैक्षिक दर्शन के अनुसार संशोधित करने की आवश्यकता है। स्वामी जी इस बात की वकालत करते हैं कि मानव मन की प्रकृति ऐसी है कि, "किसी को भी वास्तव में किसी दूसरे के द्वारा कभी नहीं सिखाया जाता है, हम में से प्रत्येक को स्वयं शिक्षक बनना होगा। मनुष्य के भीतर ही सारा ज्ञान है और इसके लिए केवल एक जागृति की आवश्यकता है और इतना ही काम है शिक्षक का।" उन्हें विद्यार्थियों के लिए इतना ही करना है कि वे अपने हाथों, पैरों, कानों, आँखों आदि के उचित उपयोग के लिए अपनी बुद्धि को प्रयोग करना सीख सकें, और सब कुछ आसान हो जाएगा। इसलिए वर्तमान प्रणाली में शिक्षा, शिक्षक की भूमिका बच्चों के मन में मौजूदा ज्ञान को जगाने, उन्हें प्रोत्साहित करने, जीवन में उत्कृष्टता के लिए उनमें आत्मविश्वास पैदा करने और बड़े पैमाने पर समाज में योगदान करने की होनी चाहिए।

वर्तमान देश में युवा छात्रों के लिए कृषि या कताई और बुनाई या कार्डबोर्ड, लकड़ी और धातु का काम, मातृभाषा जैसे विषय ज्यादा रुचि नहीं रखते हैं। इस प्रकार इन विषयों को देश में वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम में सामाजिक

अध्ययन (सामाजिक पर्यावरण, आर्थिक वातावरण, सरकारी पर्यावरण और भौतिक पर्यावरण), सामान्य विज्ञान (प्रकृति–अध्ययन, प्राणीशास्त्र, शरीर विज्ञान,) जैसे अन्य विषयों के साथ शामिल किया जाना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा में स्वच्छता, पोषण, अपना काम स्वयं करना, घर पर माता–पिता की मदद करना आदि के प्राथमिक सिदान्त शामिल होने चाहिए। शारीरिक व्यायाम, लड़कियों के लिए घरेलू विज्ञान, बच्चों को सामाजिक और नागरिक प्रशिक्षण शिक्षकों द्वारा शिक्षण के विषयों में शामिल किया जाना चाहिए। गतिविधि पाठ्यक्रम जो स्कूलों को कार्यस्थल, प्रयोग और खोज में बदलना चाहिए।

वर्तमान सन्दर्भ में शिक्षा की अवधारणा भारतीय शैक्षिक और सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय आदर्शों के आधार पर शिक्षा की एक राष्ट्रीय प्रणाली की शुरूआत होनी चाहिए। वास्तविक शिक्षा को बालक और बालिकाओं में से सर्वश्रेष्ठ को शिक्षित करने और आसपास की परिस्थितियों के अनुरूप बनाने के लिए तैयार करना है।

स्वामी विवेकानन्द 19वीं सदी के भारत के सर्वाधिक प्रभावशाली चिंतकों में से एक थे। वे वेदान्त के व्याख्याता तथा एक उच्च कोटि के आध्यात्मिक गुरु थे। उन्होंने हिंदू धर्म तथा अद्वैत वेदान्त की वैज्ञानिक और व्यावहारिक व्याख्या करते हुए भारत में नवजागरण को दिशा प्रदान की। स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन एक काल का नहीं अपितु युगो–युगो तक चलने वाला है, इसके आधार पर एक सार्वभौमिक जीवन पद्धति का निर्माण किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

- भारती और भास्कर राव स्वामी विवेकानंद और जॉन डीवी का शैक्षिक दर्शन। नई दिल्लीः ए.पी.एच. पब्लिशिंग कार्पोरेशन (2004)।
- अग्रवाल, जे.सी. उभरते भारतीय समाज में शिक्षा। नई दिल्लीः शिप्रा प्रकाशन(2008)।
- बुच, एम.बी. शिक्षा में अनुसंधान का दूसरा सर्वेक्षण। बड़ौदाः सोसाइटी फॉर रिसर्च एंड डेवलपमेंट, पी.31–35(1972)।
- बुच, एम.बी. शिक्षा में अनुसंधान का एक सर्वेक्षण। (एडु)। बड़ौदाः एम.एस विश्वविद्यालय, पी. 28–31(1974)।
- कुमार, के.जी.एन. समकालीन शिक्षा पर एक दार्शनिक समीक्षा(2015)। राजेन्द्र प्रसाद, श्स्वामी विवेकानन्द व्यक्ति और विचार प्रकाशकश राधा पब्लिकेशन गुप्त, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 1997।
- सरित, सुशील एवं भार्गव अनिल श्आधुनिक भारतीय शिक्षाविदों का चिंतनश, वेदान्त पब्लिकेशन, भार्गव बुक हाउस, कचहरी धाट, आगरा – 2004
- बुच, एम.बी. (एड) ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन सोसाइटी फॉर रिसर्च एंड डेवलपमेंट। बड़ौदा, पी.36. (1974)।
- रॉय.एस.डी.स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में शिक्षा (2001)।